Name: Sample, DOB: 18:12:1973

TOB: 01:45:00, PLACE: Ballia (up), india ()

Mindsutra Software Technologies
www.mindsutra.com
Ph: 9818193410

लाल किताब उपाय से संबंधित सावधानियाँ और सामान्य नियम

1– एक दिन में केवल एक ही उपाय करें।

2– सभी उपाय सूर्योदय के बाद एवं सूर्यास्त से पहले करें। जो उपाय सूर्यास्त के बाद करने के लिए लिखा गया है, केवल उसे ही सूर्यास्त के बाद करें।

3– सबसे पहले छोटे उपाय, जो एक दिन के होते हैं, उन्हें करना चाहिए।

4– लंबे चलने वाले उपाय लागातार करें।

5– मासिक धर्म के दौरान महिलायें मंदिर जाने वाले उपाय न करें, इस दौरान अपने खून से संबंधित परिवार के किसी सदस्य से उपाय करवायें।

6– जिस उपाय को किसी खास दिन शुरू करने के लिए न कहा गया हो, उस उपाय को करने के लिए किसी दिन या तिथि जैसे अमावस्या, पूर्णिया आदि का विचार न करें। एक दिन वाले उपाय चौथ, नवमी एवं चतुर्दशी को कर सकते हैं, लेकिन लंबे चलने वाले उपाय इन तिथियों को शुरू न करें।

7– कुछ उपाय सप्ताह, मास या 43 दिन लगातार करने होते हैं, इन उपायों को बाद में शुरू करें। ध्यान रखें कि ऐसे उपाय बीच में न टूटें, अन्यथा शुभ फल प्राप्त नहीं होंगे। यदि लंबे उपाय करते समय किसी कारण से उपाय बीच में बंद करना पड़े तो उस दिन उपाय करने के बाद थोड़े से चावल दूध से धोकर सफेद कपड़े में बांधकर अपने पास रख लें और जब दुबारा उपाय शुरू करना हो तो वह चावल धर्म स्थान में दे दें या बहते पानी में प्रवाहित कर दें। उसके बाद उपाय शुरू कर दें। ऐसा करने से उपाय अधूरा नहीं माना जाएगा और पूरा फल प्राप्त होगा।

8– यदि कोई उपाय जिंदगी भर के लिए करना है तो पहले उसे शुरू कर साथ––साथ एक––एक करके दूसरे उपाय करें।

9– जिस चीज/औजार से उपाय करें या जो भी सामान उपाय के लिए ले जायें, उसे वहीं छोड़ दें। लंबे चलने वाले उपाय में औजार आखिरी दिन छोड़ें।

10– जो चीज जल प्रवाह करें या धर्म स्थान में दें, उस दिन उस चीज का सेवन न करें।

11– उपाय के दिनों में शारीरिक संबंध स्थापित न करें।

श्रीगणेशाय नमः

गणानां त्वां गणपतिं हवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्तमम् ।
ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आ नः शृण्वन्नूतिभिः सीद सादनम् ।।

नवग्रहस्तोत्र

जपाकुसुमसंकाशं काश्पेयं महाद्युतिम्। तमोऽरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्।।
दधिशंखतुषाराभं क्षीरोदार्णवसम्भवम्। नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुटभूषणम्।।
धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम्। कुमारं शक्तिहस्तं तं मंगलं प्रणमाम्यहम्।।
प्रियंगुकलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम्। सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम्।।
देवानां च ऋषिणां च गुरुं कांचनसंनिभम्। बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम्।।
हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्। सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम्।।
नीलांजनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्। छायामार्तण्डसम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम्।।
अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम्। सिंहिकागर्भसम्भूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम्।।
पलाशपुष्पसंकाशं तारकाग्रहमस्तकम्। रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम्।।

फलश्रुति

इति व्यासमुखोद्गीतं यः पठेत् सुसमाहितः।
दिवा वा यदि वा रात्रौ विघ्नशान्तिर्भविष्यति।
नरनारीनृपाणां च भवेद्दुःस्वप्ननाशम्।
ऐश्वर्यमतुलं तेषामारोग्यं पुष्टिवर्धनम्।।
ग्रहनक्षत्रजाः पीडस्तस्कराग्निसमुद्रवाः ।
ताः सर्वाः प्रशमं यान्ति व्यासो ब्रूते न संशयः ।।

इति श्री व्यासविरचितं आदित्यादिनवग्रहस्तोत्रं संपूर्णम् ।।

जो जपापुष्प के समान अरुणिम आभावाले, महान तेज से संपन्न, अंधकार के विनाशक, सभी पापों को दूर करने वाले तथा महर्षि कश्यप के पुत्र हैं, उन सूर्य को मैं प्रणाम करता हूं। जो दधि, शंख तथा हिम के समान आभा वाले, क्षीर समुद्र से प्रादुर्भूत, भगवान शंकर के शिरोभूषण तथा अमृतस्वरुप हैं, उन चंद्रमा को मैं नमस्कार करता हूं। जो पृथ्वी देवी से उद्भूत, विद्युत् की कान्ति के समान प्रभावाले, कुमारावस्था वाले तथा हाथ में शक्ति लिए हुए हैं, उन मंगल को मैं प्रणाम करता हूं। जो प्रियंगु लता की कली के समान गहरे हरित वर्ण वाले, अतुलनीय सौन्दर्य वाले तथा सौम्य गुण से संपन्न हैं, उन चंद्रमा के पुत्र बुध को मैं प्रणाम करता हूं। जो देवताओं और ऋषियों के गुरु हैं, स्वर्णिम आभा वाले हैं, ज्ञान से संपन्न हैं तथा लोकों के स्वामी हैं, उन बृहस्पति जी को मैं नमस्कार करता हूं। जो हिम, कुन्दपुष्प तथा कमलनाल के तन्तु के समान श्वेत आभा वाले, दैत्यों के परम गुरु, सभी शास्त्रों के उपदेष्टा तथा महर्षि भृगु के पुत्र हैं, उन शुक्र को मैं प्रणाम करता हूं। जो नीले कज्जल के समान आभा वाले, सूर्य के पुत्र, यमराज के ज्येष्ठ भ्राता तथा सूर्य पत्नी छाया तथा मार्तण्ड से उत्पन्न हैं, उन शनैश्चर को मैं नमस्कार करता हूं। जो आधे शरीर वाले हैं, महान पराक्रम से संपन्न हैं, सूर्य तथा चंद्र को ग्रसने वाले हैं तथा सिंहिका के गर्भ से उत्पन्न हैं, उन राहु को मैं प्रणाम करता हूं। पलाश पुष्प के समान जिनकी आभा है, जो रुद्र स्वभाव वाले और रुद्र के पुत्र हैं, भयंकर हैं, तारकादि ग्रहों में प्रधान हैं, उन केतु को मैं प्रणाम करता हूं। भगवान वेदव्यास जी के मुख से प्रकट इस स्तुति का जो दिन में अथवा रात में एकाग्रचित्त होकर पाठ करता है, उसके समस्त विघ्न शान्त हो जाते हैं, स्त्री–पुरुष और राजाओं के दुःस्वप्नों का नाश हो जाता है। पाठ करने वालों को अतुलनीय ऐश्वर्य और आरोग्य प्राप्त होता है तथा उनके पुष्टि की वृद्धि होती है।

ज्योतिष सारिणी

मुख्य विवरण

जन्म दिनाकं	18:12:1973(मंगलवार)
जन्म समय	01:45:00
जन्म स्थान	Ballia (up), india
अक्षांश	025:45:00N
रेखांश	084:10:00E
यु./ग्रीष्म समय संस्कार	-00:00
जी. एम. टी. समय	020:15:00
स्थानीय समय	001:51:40 hrs
सांपातिक काल	007:36:54 hrs
स्थानीय समय संस्कार	000:06:40
अयनांश	N.C.Lahiri(023:29:36)
सूर्योदय	06:37:05AM
सूर्यास्त	05:03:04PM
विक्रम संवत	2030
शक संवत	1895
संवत्सर	प्रमादी
संवत्सर अधिपति	इन्द्राग्नि

घात चक्र

राशि (सूर्य)	कुम्भ
मास	फाल्गुन
तिथि	5,10,15
वार	शुक्रवार
नक्षत्र	अश्लेषा
प्रहर	4
लग्न	सिहं
सूर्य सिद्धान्त योग	वज्र
करण	चतुश्पद

अवकहड़ा चक्र

लग्न	कन्या
लग्नाधिपति	बुध
राशि (चन्द्रमा)	कन्या
राशिपति	बुध
नक्षत्र	हस्ता
नक्षत्रपति	चन्द्रमा
नक्षत्र चरण	2
ऋतु	बसन्त
मास	चैत्र
पक्ष	कृष्ण
तिथि	नवमी
तिथि श्रेणी	रिक्ता
तिथि पति	सूर्य
करण	गरिज
करण श्रेणी	चर
करणपति	वासुदेव
गण	देव
योनि	हस्त (स्त्री)
वर्ण	वैश्य
सूर्य सिद्धान्त योग	सौभाग्य
रज्जु	कंठ
वश्य	द्विपद
तत्व	अग्नि
विहग	वायस
तत्वाधिपति	मंगल
नाड़ी	आदि
नाड़ी पद	मध्य
वेध	शतभिषा
आद्याक्षर	Shaa
पाया	स्वर्ण

ग्रहों की स्थिति (लाल किताब)

लग्न कुण्डली

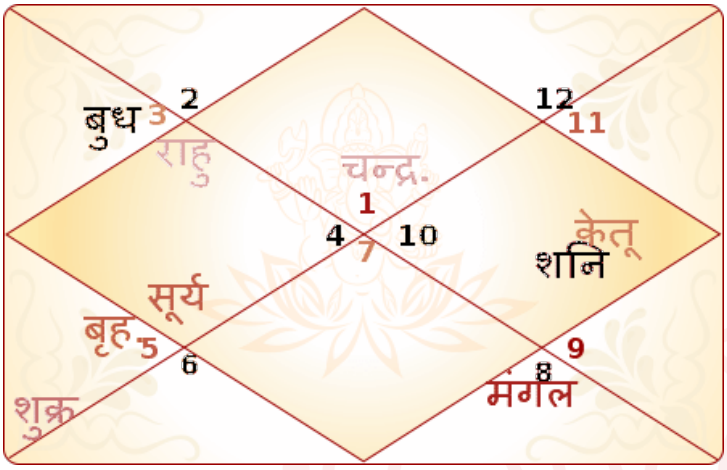

चन्द्र कुण्डली

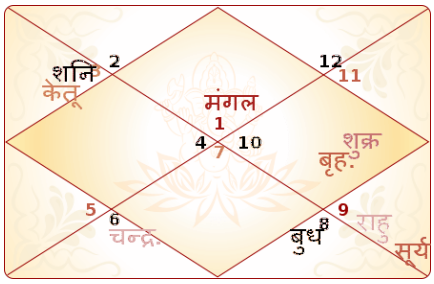

संसोधित कुण्डली

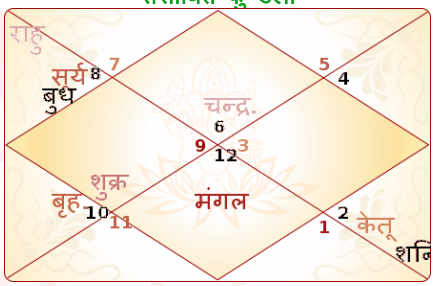

लाल किताब कुण्डली में ग्रहों की स्थिति

ग्रह	भाव	भावेश	प्रभाव	पक्का घर	भाग्यशाली	साथी ग्रह	कायम	धर्मी	सोया	विशेष
सूर्य	4	5	ग्रह			चन्द्रमा				शुभ भाव
चन्द्रमा	1	4	ग्रह			सूर्य	हाँ		हाँ	शुभ भाव
मंगल	8	1, 8	ग्रह	हाँ						अशुभ भाव
बुध	3	3, 6	ग्रह		हाँ				हाँ	अशुभ भाव
बृहस्पति	5	9, 12	ग्रह	हाँ						शुभ भाव
शुक्र	5	2, 7	राशि				हाँ		हाँ	...
शनि	10	10, 11	ग्रह	हाँ	हाँ					शुभ भाव
राहु	4		राशि					हाँ		शुभ भाव
केतु	10		राशि				हाँ		हाँ	शुभ भाव

लाल किताब कुण्डली से भाव स्थिति

भाव	भावस्थ ग्रह	मालिक	पक्का घर	सोया	उच्च	नीच	भाग्य उत्प्रेरक
1	चन्द्रमा	मंगल	सूर्य		सूर्य	शनि	मंगल
2		शुक	बृहस्पति		चन्द्रमा		चन्द्रमा
3	बुध	बुध	मंगल		राहु	केतु	बुध
4	सूर्य, राहु	चन्द्रमा	चन्द्रमा		बृहस्पति	मंगल	चन्द्रमा
5	बृहस्पति, शुक	सूर्य	बृहस्पति				सूर्य
6		बुध	बुध,केतु	हाँ	बुध,राहु	शुक,केतु	केतु
7		शुक	शुक,बुध		शनि		शुक
8	मंगल	मंगल	मंगल,शनि			चन्द्रमा	चन्द्रमा
9		बृहस्पति	बृहस्पति		केतु	राहु	शनि
10	शनि, केतु	शनि	शनि		मंगल	बृहस्पति	शनि
11		शनि	शनि				बृहस्पति
12		बृहस्पति	बृहस्पति		शुक,केतु	बुध,राहु	राहु

षोडश वर्ग कुण्डली

होरा कुण्डली

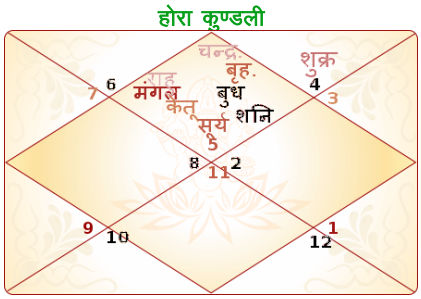

धन दौलत के लिए

द्रेष्काण कुण्डली

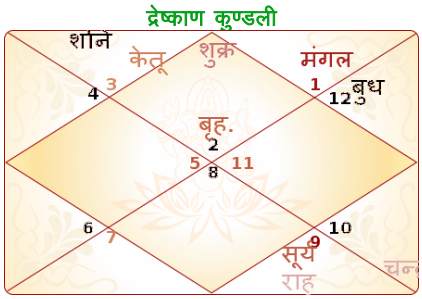

सहोदरों का जीवन और स्वास्थ्य

चतुर्थांश कुण्डली

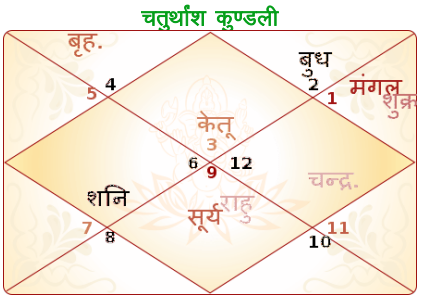

भाग्य और रिहायशी मकान

सप्तमांश कुण्डली

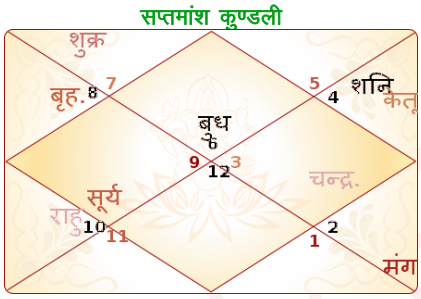

संतान और उनकी संतान

नवांश कुण्डली

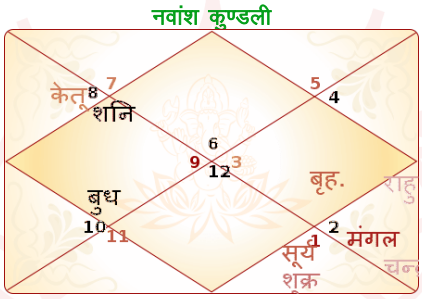

जीवनसाथी और उनका स्वास्थ्य

दसमांश कुण्डली

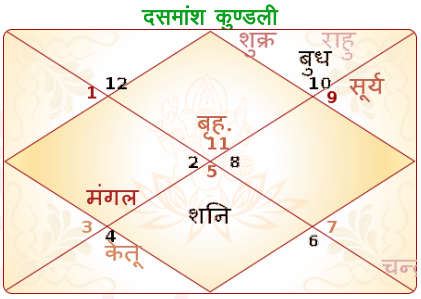

कारोबार और किसी भी कार्य में सफलता

द्वादशांश कुण्डली

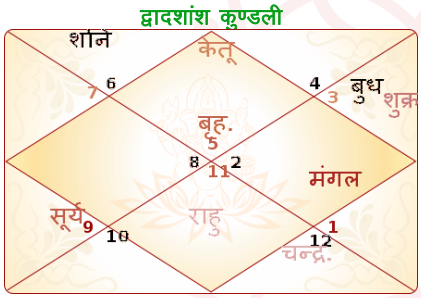

माता पिता का जीवन और उनका स्वास्थ्य

षोडशांश कुण्डली

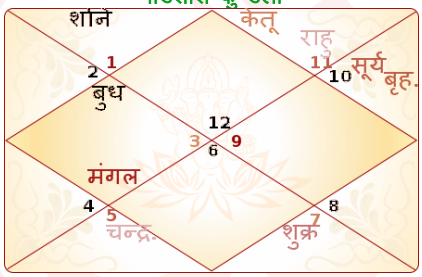

वाहन से संबंधित बातें

विशांश कुण्डली

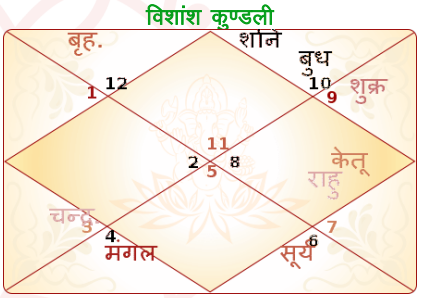

आध्यात्मिक रूझान

चर्तुविशांश कुण्डली

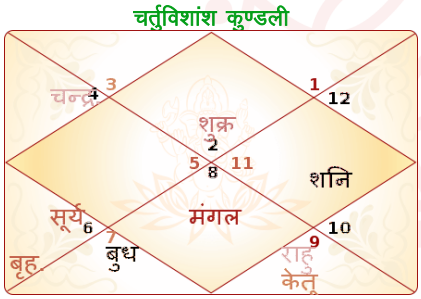

शिक्षा, ज्ञान और समझ

सप्तविशांश कुण्डली

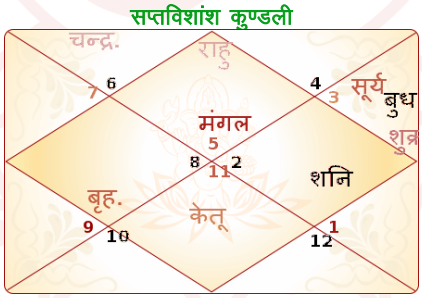

ताकत और दुर्बलता

त्रिशांश कुण्डली

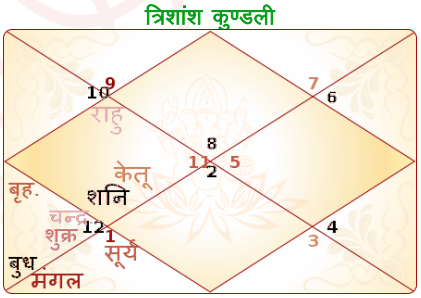

दरिद्रता, कठिनाईयाँ और दुर्गति

खवेदांश कुण्डली

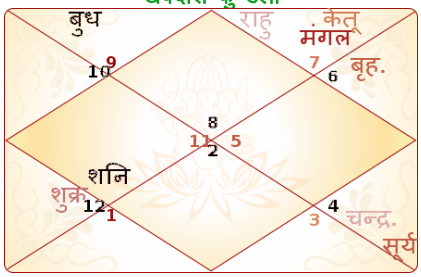

शुभ अशुभ घटनाँए

अक्षवेदांश कुण्डली

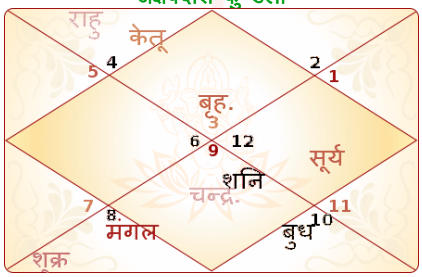

सभी मुद्दों के लिए

षष्टांश कुण्डली

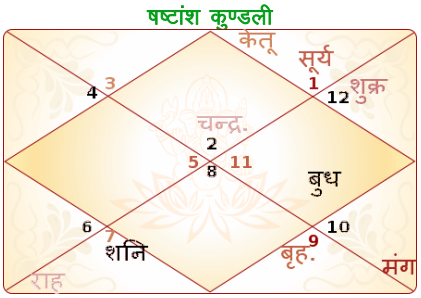

सभी मुद्दों के लिए

विंशोत्तरी दशा

जन्म के समय विंशोत्तरी भोग्य दशा (अयनाश : 023:29:36) चन्द्रमा 5.0 व.5.0 म.26 द.

क्र0 स0	ग्रह दशा	अवधि	से
1	चन्द्रमा	5.0 y.5.0 m.26 d.	18:12:1973
2	मंगल	7.0 y.0.0 m.0 d.	14:06:1979
3	राहु	18.0 y.0.0 m.0 d.	14:06:1986
4	बृहस्पति	16.0 y.0.0 m.0 d.	13:06:2004
5	शनि	19.0 y.0.0 m.0 d.	13:06:2020
6	बुध	17.0 y.0.0 m.0 d.	14:06:2039
7	केतु	7.0 y.0.0 m.0 d.	13:06:2056
8	शुक्र	20.0 y.0.0 m.0 d.	14:06:2063
9	सूर्य	6.0 y.0.0 m.0 d.	14:06:2083

चन्द्रमा दशा

अन्तर्दशा	से
चन्द्रमा	
मंगल	
राहु	
बृहस्पति	
शनि	18:12:1973
बुध	14:04:1975
केतु	13:09:1976
शुक्र	14:04:1977
सूर्य	13:12:1978

मंगल दशा

अन्तर्दशा	से
मंगल	14:06:1979
राहु	10:11:1979
बृहस्पति	28:11:1980
शनि	04:11:1981
बुध	13:12:1982
केतु	10:12:1983
शुक्र	08:05:1984
सूर्य	08:07:1985
चन्द्रमा	13:11:1985

राहु दशा

अन्तर्दशा	से
राहु	14:06:1986
बृहस्पति	24:02:1989
शनि	20:07:1991
बुध	26:05:1994
केतु	13:12:1996
शुक्र	31:12:1997
सूर्य	31:12:2000
चन्द्रमा	25:11:2001
मंगल	26:05:2003

बृहस्पति दशा

अन्तर्दशा	से
बृहस्पति	13:06:2004
शनि	01:08:2006
बुध	12:02:2009
केतु	20:05:2011
शुक्र	25:04:2012
सूर्य	25:12:2014
चन्द्रमा	13:10:2015
मंगल	12:02:2017
राहु	19:01:2018

शनि दशा

अन्तर्दशा	से
शनि	13:06:2020
बुध	17:06:2023
केतु	24:02:2026
शुक्र	05:04:2027
सूर्य	05:06:2030
चन्द्रमा	17:05:2031
मंगल	16:12:2032
राहु	25:01:2034
बृहस्पति	01:12:2036

बुध दशा

अन्तर्दशा	से
बुध	14:06:2039
केतु	10:11:2041
शुक्र	07:11:2042
सूर्य	07:09:2045
चन्द्रमा	14:07:2046
मंगल	13:12:2047
राहु	10:12:2048
बृहस्पति	29:06:2051
शनि	04:10:2053

केतु दशा

अन्तर्दशा	से
केतु	13:06:2056
शुक्र	10:11:2056
सूर्य	10:01:2058
चन्द्रमा	17:05:2058
मंगल	16:12:2058
राहु	14:05:2059
बृहस्पति	01:06:2060
शनि	08:05:2061
बुध	17:06:2062

शुक्र दशा

अन्तर्दशा	से
शुक्र	14:06:2063
सूर्य	13:10:2066
चन्द्रमा	13:10:2067
मंगल	14:06:2069
राहु	14:08:2070
बृहस्पति	14:08:2073
शनि	13:04:2076
बुध	14:06:2079
केतु	14:04:2082

सूर्य दशा

अन्तर्दशा	से
सूर्य	14:06:2083
चन्द्रमा	01:10:2083
मंगल	01:04:2084
राहु	07:08:2084
बृहस्पति	02:07:2085
शनि	20:04:2086
बुध	02:04:2087
केतु	06:02:2088
शुक्र	13:06:2088

लाल किताब लग्न कुण्डली में ग्रहों की दृष्टि

सामान्य दृष्टि

	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	बृह	शुक	शनि	राहु	राहु
सूर्य							100		100
चन्द्र									
मंगल									
बुध									
बृह									
शुक									
शनि									
राहु							100		100
राहु									

ग्रहों की दृष्टि

	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	बृह	शुक	शनि	राहु	राहु
सूर्य							✔		✔
चन्द्र									
मंगल				✔					
बुध									
बृह		✔							
शुक									
शनि	✔							✔	
राहु			✔				✔		✔
राहु	✔							✔	

टक्कर की दृष्टि

	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	बृह	शुक	शनि	राहु	राहु
सूर्य									
चन्द्र			✔						
मंगल				✔					
बुध							✔		✔
बृह									
शुक									
शनि					✔	✔			
राहु									
राहु					✔	✔			

पाये की दृष्टि

	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	बृह	शुक	शनि	राहु	राहु
सूर्य									
चन्द्र									
मंगल	✔							✔	
बुध									
बृह		✔							
शुक		✔							
शनि									
राहु									
राहु									

विश्वासघात की दृष्टि

	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	बृह	शुक	शनि	राहु	राहु
सूर्य		✔							
चन्द्र							✔		✔
मंगल					✔	✔			
बुध									
बृह									
शुक									
शनि									
राहु		✔							
राहु									

सहचरी दिवार की दृष्टि

	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	बृह	शुक	शनि	राहु	राहु
सूर्य				✔	✔	✔			
चन्द्र	✔						✔	✔	✔
मंगल									
बुध									
बृह									
शुक									
शनि									
राहु				✔	✔	✔			
राहु									

अचानक प्रहार की दृष्टि

	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	बृह	शुक	शनि	राहु	राहु
सूर्य							✔		✔
चन्द्र				✔					
मंगल							✔		✔
बुध		✔							
बृह									
शुक									
शनि	✔		✔					✔	
राहु							✔		✔
राहु	✔		✔					✔	

परस्पर सहयोग की दृष्टि

	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	बृह	शुक	शनि	राहु	राहु
सूर्य			✔						
चन्द्र					✔	✔			
मंगल									
बुध									
बृह									
शुक									
शनि									
राहु			✔						
राहु									

लाल किताब 35 वर्षीय चक्र

दशारम्भ का ग्रह : शनि दशारम्भ दिनांक : 18:12:1973

प्रथम चक्र

शनि दशा 6 वर्ष	
राहु	18/12/1973
मंगल	18/12/1975
शनि	18/12/1977

राहु दशा 6 वर्ष	
मंगल	18/12/1979
केतु	18/12/1981
राहु	18/12/1983

केतु दशा 3 वर्ष	
शनि	18/12/1985
राहु	18/12/1986
केतु	18/12/1987

बृहस्पति दशा 6 वर्ष	
केतु	18/12/1988
बृहस्पति	18/12/1990
सूर्य	18/12/1992

सूर्य दशा 2 वर्ष	
सूर्य	18/12/1994
चन्द्रमा	18/08/1995
मंगल	18/04/1996

चन्द्रमा दशा 1 वर्ष	
बृहस्पति	18/12/1996
सूर्य	18/04/1997
चन्द्रमा	18/08/1997

शुक्र दशा 3 वर्ष	
मंगल	18/12/1997
शुक्र	18/12/1998
बुध	18/12/1999

मंगल दशा 6 वर्ष	
मंगल	18/12/2000
शनि	18/12/2002
शुक्र	18/12/2004

बुध दशा 2 वर्ष	
चन्द्रमा	18/12/2006
मंगल	18/08/2007
बृहस्पति	18/04/2008

द्वितीय चक्र

शनि दशा 6 वर्ष	
राहु	18/12/2008
मंगल	18/12/2010
शनि	18/12/2012

राहु दशा 6 वर्ष	
मंगल	18/12/2014
केतु	18/12/2016
राहु	18/12/2018

केतु दशा 3 वर्ष	
शनि	18/12/2020
राहु	18/12/2021
केतु	18/12/2022

बृहस्पति दशा 6 वर्ष	
केतु	18/12/2023
बृहस्पति	18/12/2025
सूर्य	18/12/2027

सूर्य दशा 2 वर्ष	
सूर्य	18/12/2029
चन्द्रमा	18/08/2030
मंगल	18/04/2031

चन्द्रमा दशा 1 वर्ष	
बृहस्पति	18/12/2031
सूर्य	18/04/2032
चन्द्रमा	18/08/2032

शुक्र दशा 3 वर्ष	
मंगल	18/12/2032
शुक्र	18/12/2033
बुध	18/12/2034

मंगल दशा 6 वर्ष	
मंगल	18/12/2035
शनि	18/12/2037
शुक्र	18/12/2039

बुध दशा 2 वर्ष	
चन्द्रमा	18/12/2041
मंगल	18/08/2042
बृहस्पति	18/04/2043

तृतीय चक्र

शनि दशा 6 वर्ष	
राहु	18/12/2043
मंगल	18/12/2045
शनि	18/12/2047

राहु दशा 6 वर्ष	
मंगल	18/12/2049
केतु	18/12/2051
राहु	18/12/2053

केतु दशा 3 वर्ष	
शनि	18/12/2055
राहु	18/12/2056
केतु	18/12/2057

बृहस्पति दशा 6 वर्ष	
केतु	18/12/2058
बृहस्पति	18/12/2060
सूर्य	18/12/2062

सूर्य दशा 2 वर्ष	
सूर्य	18/12/2064
चन्द्रमा	18/08/2065
मंगल	18/04/2066

चन्द्रमा दशा 1 वर्ष	
बृहस्पति	18/12/2066
सूर्य	18/04/2067
चन्द्रमा	18/08/2067

शुक्र दशा 3 वर्ष	
मंगल	18/12/2067
शुक्र	18/12/2068
बुध	18/12/2069

मंगल दशा 6 वर्ष	
मंगल	18/12/2070
शनि	18/12/2072
शुक्र	18/12/2074

बुध दशा 2 वर्ष	
चन्द्रमा	18/12/2076
मंगल	18/08/2077
बृहस्पति	18/04/2078

लाल किताब 35 वर्षीय चक्र

दशारम्भ जन्म समय का ग्रह : शनि दशारम्भ दिनांक : 18:12:1973

प्रथम चक्र

शनि दशा 6 वर्ष	
राहु	18/12/1973
मंगल	18/12/1975
शनि	18/12/1977

राहु दशा 6 वर्ष	
मंगल	18/12/1979
केतु	18/12/1981
राहु	18/12/1983

केतु दशा 3 वर्ष	
शनि	18/12/1985
राहु	18/12/1986
केतु	18/12/1987

बृहस्पति दशा 6 वर्ष	
केतु	18/12/1988
बृहस्पति	18/12/1990
सूर्य	18/12/1992

सूर्य दशा 2 वर्ष	
सूर्य	18/12/1994
चन्द्रमा	18/08/1995
मंगल	18/04/1996

चन्द्रमा दशा 1 वर्ष	
बृहस्पति	18/12/1996
सूर्य	18/04/1997
चन्द्रमा	18/08/1997

शुक्र दशा 3 वर्ष	
मंगल	18/12/1997
शुक्र	18/12/1998
बुध	18/12/1999

मंगल दशा 6 वर्ष	
मंगल	18/12/2000
शनि	18/12/2002
शुक्र	18/12/2004

बुध दशा 2 वर्ष	
चन्द्रमा	18/12/2006
मंगल	18/08/2007
बृहस्पति	18/04/2008

द्वितीय चक्र

शनि दशा 6 वर्ष	
राहु	18/12/2008
मंगल	18/12/2010
शनि	18/12/2012

राहु दशा 6 वर्ष	
मंगल	18/12/2014
केतु	18/12/2016
राहु	18/12/2018

केतु दशा 3 वर्ष	
शनि	18/12/2020
राहु	18/12/2021
केतु	18/12/2022

बृहस्पति दशा 6 वर्ष	
केतु	18/12/2023
बृहस्पति	18/12/2025
सूर्य	18/12/2027

सूर्य दशा 2 वर्ष	
सूर्य	18/12/2029
चन्द्रमा	18/08/2030
मंगल	18/04/2031

चन्द्रमा दशा 1 वर्ष	
बृहस्पति	18/12/2031
सूर्य	18/04/2032
चन्द्रमा	18/08/2032

शुक्र दशा 3 वर्ष	
मंगल	18/12/2032
शुक्र	18/12/2033
बुध	18/12/2034

मंगल दशा 6 वर्ष	
मंगल	18/12/2035
शनि	18/12/2037
शुक्र	18/12/2039

बुध दशा 2 वर्ष	
चन्द्रमा	18/12/2041
मंगल	18/08/2042
बृहस्पति	18/04/2043

तृतीय चक्र

शनि दशा 6 वर्ष	
राहु	18/12/2043
मंगल	18/12/2045
शनि	18/12/2047

राहु दशा 6 वर्ष	
मंगल	18/12/2049
केतु	18/12/2051
राहु	18/12/2053

केतु दशा 3 वर्ष	
शनि	18/12/2055
राहु	18/12/2056
केतु	18/12/2057

बृहस्पति दशा 6 वर्ष	
केतु	18/12/2058
बृहस्पति	18/12/2060
सूर्य	18/12/2062

सूर्य दशा 2 वर्ष	
सूर्य	18/12/2064
चन्द्रमा	18/08/2065
मंगल	18/04/2066

चन्द्रमा दशा 1 वर्ष	
बृहस्पति	18/12/2066
सूर्य	18/04/2067
चन्द्रमा	18/08/2067

शुक्र दशा 3 वर्ष	
मंगल	18/12/2067
शुक्र	18/12/2068
बुध	18/12/2069

मंगल दशा 6 वर्ष	
मंगल	18/12/2070
शनि	18/12/2072
शुक्र	18/12/2074

बुध दशा 2 वर्ष	
चन्द्रमा	18/12/2076
मंगल	18/08/2077
बृहस्पति	18/04/2078

आपकी कुण्डली में लागु होने वाले ऋण

पितृ ऋण

आपकी कुण्डली में सूर्य न तो पहले भाव में और न ही ग्यारहवें भाव में है और शुक्र पांचवें भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, यह आपकी कुण्डली में पितृ ऋण को दर्शाता है। आपको लाल किताब में बताये हुए उपायों का पालन करना चाहिए। यह पितृ ऋण सूर्य से सम्बन्धित है। आपको सूर्य से सम्बन्धित लाल किताब के उपाय करने चाहिए।

पितृ ऋण के कारण

यदि कुल पुरोहित को अपने किसी निजी कारण से बदला गया या घर के आस–पास का कोई धार्मिक स्थल नष्ट कर दिया गया हो या घर के आस–पास में कोई पीपल या बड़गद का पेड़ नष्ट कर दिया गया हो या पीपल के पेड़ के नीचे शौच कर्म किया गया तो पितृ ऋण लागू होगा।

पितृ ऋण के लक्षण और प्रभाव

लाल किताब के अनुसार, आपके बाल में जब सफेदी आने लगेगी तो घर की धन–सम्पत्ति अपने आप नष्ट होनी शुरू हो जायेगी और आप विभिन्न समस्याओं से घिर सकते हैं तथा सिर पर चोटी के स्थान से बाल गायब हो जाते हैं और आप गले में माला या कंठी पहनना शुरू कर सकते हैं। आपके बारे में गलत अफवाहें उड़नी शुरू हो सकती हैं। आपको बिना गलती ही जेल जाना पड़ सकता है। परिवार में व्यर्थ के तनाव रह सकते हैं। बने–बनाये काम आखिरी वक्त पर बिगड़ सकते हैं, परिवार में व्यर्थ के कलह शुरू हो जायेंगे, परिवार में किसी की बीमारी का पता नहीं चल सकता है तथा आपकी मेहनत का फल देरी से प्राप्त हो सकता है। शुभ कामों में देरी हो सकती है, अच्छी आमदनी होते हुए भी बचत नहीं होगी, अपने पिता से आपका मनमुटाव हो सकता है, आपके शरीर में अक्सर दर्द रह सकता है। आपके रोजगार में निरंतर गिरावट हो सकती हैएवं आप आर्थिक रूप से बर्बाद हो सकते हैं।

पितृ ऋण के उपाय

स्वयं का ऋण

आपकी कुण्डली में शुक्र पांचवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, यह आपकी कुण्डली में लागू हो रहे स्वयं के ऋण का परिचायक है।

स्वयं का ऋण के कारण

आप पूर्व जन्म में नास्तिक होंगे एवं परंपराओं का अपमान किया होगा या धर्म विरोधी कार्यों में संलग्न होंगे या अपने कुल की मर्यादा का उलंघन किया होगा, इसलिए आप पर स्व ऋण लागू होगा।

स्वयं का ऋण के लक्षण और प्रभाव

आपके घर में तन्दूर या भट्टी हो सकती है।आपके घर की छत के किसी सुराख से रोशनी आ रही होगी या हृदय रोग के लक्षण होंगे।आप अपने जीवन में उन्नति करेंगे और धन इकठ्ठा करेंगे। आप समाज में बहुत

सम्मानित भी हो सकते हैं, परन्तु आपका पुत्र ग्यारह महीने या ग्यारह साल का होता है तो आपके सम्मान और धन पर ग्रहण लग सकता है। आपके स्वास्थ्य पर भी बुरा असर पड़ सकता है। यहां तक कि आप अपना शरीर भी नहीं हिला सकते हैं। निर्दोष होते हुए भी दण्ड भोगना पड़े या जीवन संघर्षों से भरा हो तो स्व ऋण का लक्षण माना जाएगा।

स्वयं का ऋण के उपाय

महत्वपूर्ण जानकारी (लाल किताब)

अन्धे ग्रहों की कुण्डली

लाल किताब के अनुसार, यदि किसी कुण्डली के दसवें भाव में दो आपस में शत्रु ग्रह में बैठ जायें, तो ऐसी कुण्डली को अंधे ग्रहों की कुण्डली (टेवा) कहते हैं। कुण्डली में दसवां भाव जातक का कर्म स्थान है, इस घर का जातक की कमाई से संबद्ध है, इसलिए ऐसे भाव में दो या दो से अधिक परस्पर शत्रुता वाले ग्रह बैठ जायें तो, जातक के कर्मक्षेत्र में असंतुलन की स्तिथि पैदा हो जाती है। जातक की नौकरी या व्यापार में स्थिरता नहीं आ पाती है। दसवें भाव में बैठे अंधे हो चुके ग्रहों को ठीक करने के लिए दस अंधों को भोजन कराना चाहिए।

निष्कर्ष – आपकी कुण्डली अंधे ग्रहों की कुण्डली (टेवा) नहीं है।

आधे अन्धे ग्रहों की कुण्डली

लाल किताब के अनुसार, यदि चौथे भाव में सूर्य और सातवें भाव में शनि स्थित हों तो ऐसी कुण्डली को आधे अंधे ग्रहों की कुण्डली कहते हैं। इस ग्रह की स्थिति का जातक की मानसिक स्थिति और व्यवसायिक जीवन पर अशुभ असर होगा। जातक की मानसिक शांति में काफी कमी आ सकती है। चौथा भाव हमारे सुख का भी घर है, इस ग्रह स्थिति के कारण गृहस्थ सुख में कमी आने की संभावना होती है।

निष्कर्ष – आपकी कुण्डली आधे अंधे ग्रहों की कुण्डली (टेवा) नहीं है।

धर्मी कुण्डली

लाल किताब के अनुसार, यदि कुण्डली में बृहस्पति के साथ शनि बैठा हुआ है, तो ऐसी कुण्डली को धर्मी कुण्डली (टेवा) कहते हैं। ऐसे जातक के जीवन में कभी भी कोई बड़ी समस्या नही आ सकती है, जो कि जीवन में उथल–पुथल मचा दे। किसी बहुत मुश्किल या कष्ट के समय उसे कहीं न कहीं से दैवीय सहायता प्राप्त हो जाएगी।

निष्कष– यह कुण्डली धर्मी कुण्डली (टेवा) नहीं है।

ग्रहफल (लाल किताब)

सूर्य चौथे भाव मे

आपकी लाल किताब कुण्डली में सूर्य चौथे भाव में स्थित है। आप धन संग्रह करते रहेंगे और अन्य लोग इससे लाभ प्राप्त करेंगे। आपकी संतान करोड़पति होगी। आप किसी नई चीज का अविष्कार करेंगे और इस नयी खोज से आपको लाभ प्राप्त होगा। आपको नये कार्यों में सफलता प्राप्त होगी। यदि आप अपने पैतृक व्यवसाय के अलाव कोई अन्य कार्य करेंगे तो आपको उसमें अधिक लाभ प्राप्त होगा। आप अपने देश को छोड़ कर विदेश में निवास कर सकते हैं। अपने पिता के साथ आपके संबंध मधुर होंगे। आपको पैतृक सम्पत्ति भी प्राप्त होगी। यदि आप अपने घर पर नल लगवाते हैं या कुँआ बनवाते हैं तो आपको शुभ परिणाम प्राप्त होंगे। आपको मन की शान्ति प्राप्त होगी। आपको अपनी 25 से 50 साल की आयु में बहुत लाभ प्राप्त होगा। पानी, कपड़े और दूध का व्यवसाय आपके लिये बहुत लाभकारी होगा और आप इससे बहुत लाभ कमायेंगे। विशेषकर कपड़े का व्यवसाय आपके लिये बहुत लाभकारी होगा। आप फल देने वाले वृक्ष लगायेंगे।

यदि आप रात में काम करेंगे तो आपको अधिक लाभ प्राप्त होगा। आपको घर संबंधित कोई समस्या नहीं आयेगी। आप समुद्री यात्राओं से लाभ प्राप्त करेंगे। आपको सरकारी विभाग से लाभ प्राप्त होंगे। आपकी पत्नी आपके लिये भाग्यशाली साबित होगी। आपको उनसे लाभ प्राप्त होगा। उन्हें अपने काम में उन्नति प्राप्त होगी। यदि आप वाहन से संबंधित कोई व्यवसाय करते हैं तो आपको लाभ प्राप्त होगा।

यदि आपमें चोरी करने की आदत हुई, आपने दूसरों के बनते काम बिगाड़े, किसी स्त्री के साथ गलत व्यवहार किया या पराई औरतों के साथ अनैतिक संबंध रखे तो आपका सूर्य कमजोर हो सकता है। यदि आपका सूर्य किसी कारण से कमजोर हो जाता है तो इसका बुरा असर आपके बच्चों पर पड़ सकता है। आपकी माता और बहन को समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। आप बिना किसी कारण के दुःखी रह सकते हैं। आपकी माता चिन्तित रह सकती हैं और उनका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रह सकता है। आपको जीवन में कई समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। यदि आपने दूसरों के बनते काम बिगाड़े तो आपको अपने कार्य में बाधाओं का

सामना करना पड़ सकता है और आपको रक्तचाप की समस्या हो सकती है। आपके माता–पिता के सुख में कमी आ सकती है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्न परहेज और उपाय करें।

परहेज : –

1– आपको चोरी से दूर रहना चाहिये।

2– महिलाओं के झगडे से दूर रहें।

उपाय : –

1– अन्धों को भोजन दें।

2– शुद्ध सोना पहनें।

चन्द्रमा पहले भाव मे

आपकी लाल किताब कुण्डली में चन्द्रमा पहले भाव में स्थित है। आपका जन्म काफी मिन्नतों के बाद हुआ होगा या आपका जन्म एक से अधिक बहनों के जन्म के बाद हुआ होगा। आपमें सबको आकर्शित करने की क्षमता होगी। आपको सफेद कपड़े पहनना पसन्द होगा। आपका स्वभाव शांत और विनम्र होगा। आप सुंदर होंगे। आप विद्वान होंगे और आपको कई भाश्शाओं का ज्ञान होगा। आपको पैतृक घर प्राप्त होगा। आप सम्पन्न होंगे और आपको जीवन में धन की कभी कमी नहीं होगी। यदि आपका विवाह 28 साल की आयु में होता है तो आप सारा जीवन सुखी रहेंगे। आपको किसी व्यक्ति की सम्पत्ति या धन प्राप्त होगा और इससे आप धनी हो जायेंगे। जब तक आपकी माता जीवित हैं, आपको धन की कमी नहीं होगी। आप दीर्घायु होंगे। आपको सरकार से सम्मान प्राप्त होगा। आपके जन्म के बाद आपके पिता की आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आपके पिता को व्यापार, आर्थिक लाभ और जीवन से संबंधित शुभ परिणाम प्राप्त होंगे। यदि आप 24 से 27 साल की आयु के बीच कोई यात्रा करते हैं तो यात्रा से वापस आने के बाद अपनी माता का आशीर्वाद लें। इससे आपकी माता दीर्घायु होंगी। आपको 24 साल की आयु से पहले अपना घर नहीं बनवाना चाहिये। आपकी वृद्धावस्था सुख से पूर्ण होगी।

यदि आप 24 साल से पहले अपना घर बनवाते हैं, 28 साल की आयु में विवाह करते हैं, अपनी आया से झगड़ा करते हैं या गाय को कश्श्ट देते हैं तो आपका चन्द्रमा कमजोर हो सकता है। यदि आपका चन्द्रमा किसी कारणवश कमजोर हो जाता है तो आप पानी में डूब सकते हैं। आपको मानसिक शांति नहीं मिल सकती है और आप चिन्तित रह सकते हैं। आपको मानसिक रोग हो सकता है। आपका स्वास्थ्य ठीक नहीं रह सकता है। आपको दिल और ऑख से सम्बन्धित रोग हो सकते हैं। आपको पुत्र का सुख प्राप्त नहीं हो सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्न परहेज और उपाय करें।

परहेज : –

1– अपनी माता या बूढ़ी औरतों से झगड़ा न करें।

2– आपको नैतिक मार्ग से विचलित नहीं होना चाहिये।

उपाय : –

1– चांदी के गिलास में पानी या दूध पियें।

2– पीपल के वृक्ष पर जल चढ़ायें।

मंगल आठवे भाव मे

आपकी लाल किताब कुण्डली में मंगल आठवें भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार आप मांगलिक हैं। आपको अपने माता–पिता का पूरा सहयोग प्राप्त होगा। अपने जीवनसाथी के साथ आपके संबंध मधुर होंगे और आपका वैवाहिक जीवन आनन्दपूर्ण होगा। आप निडर और उत्साही होंगे। परिणामों की परवाह किये बिना आप चुनौतियों का मुकाबला करेंगे। आप न्याय पाने के लिये लड़ाई करने से नहीं हिचकिचायेंगे। आप अपने काम में गहरी रूचि लेंगे और उसे पूरे मन से करेंगे। भगवान आपका जीवन बुरी घटनाओं से बचायेगा। आप बाधाओं का मुकाबला चिन्तित हुये बिना करेंगे। आपको अपने ससुराल वालों से सम्पत्ति प्राप्त होगी। आप अपने शत्रुओं को परास्त करेंगे।

यदि आप विधवा स्त्री के साथ झगड़ा करेंगे, हर समय अपने पास चाकू रखेंगे, लोगों के साथ झगड़ा करेंगे,

आपके घर पर जमीन के नीचे कोई भठ्ठी हुई तो आपका मंगल कमजोर हो सकता है। यदि आपका मंगल किसी कारणवश कमजोर हो जाता है तो आपके छोटे भाई को अशुभ परिणाम प्राप्त हो सकते हैं। उसके कारण झगड़ा हो सकता है। आपका भाई आपकी बर्बादी का कारण बन सकता है। किसी अचानक दुर्घटना के कारण आपको कोई रक्त संबंधी विकार हो सकता है या कोई नाखून संबंधी रोग हो सकता है। किसी व्यक्ति पर बिना किसी कारण क्रोध करना आपके लिये पश्चाताप का कारण बन सकता है। आपको हानि भी हो सकती है। कोई आप पर आक्रमण कर सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्न परहेज और उपाय करें।

परहेज : –

1– अपने घर पर जमीन के नीचे कोई भठ्ठी न रखें।

2– तोता न पालें।

उपाय : –

1– विधवा का आशीर्वाद लें।

2– तन्दूर में मीठी रोटी पकाकर कुत्ते को खिलायें।

बुध तिसरे भाव मे

आपकी लाल किताब कुण्डली में बुध तीसरे भाव में स्थित है। आप सदैव यात्रा करेंगे। आपको चिकित्सा व्यवसाय में यश प्राप्त होगा। आपके मित्र और संबंधी आपकी सहायता करेंगे। आपको कुछ खराब परिणामों के साथ उत्तम परिणाम प्राप्त होंगे। आप दूसरों के लिये भाग्यशाली साबित होंगे। जो भी आपसे मिलेगा, उसे लाभ प्राप्त होगा। आपको आय के उत्तम साधन प्राप्त होते रहेंगे। यदि आप फल, खेती, कांसे के बर्तन, पशुपालन से सम्बन्धित व्यवसाय करते हैं तो आपको लाभ प्राप्त होगा। आप अपने मामा और संतानों के लिये लाभकारी होंगे। आपको दमा का उपचार करना आता होगा। आप अपने व्यापार में प्रगति करेंगे। आप निडर होंगे, लेकिन झगड़ों से दूर रहेंगे। आपको बुरे कार्यों से घृणा होगी। किसी नये कार्य को आरम्भ करते समय आपके दिमाग में कई विचार आयेंगे और आप जिन पर विश्वास करेंगे, उनसे परामर्श करेंगे। आप अपने दिमाग से भी सोचेंगे।

यदि आप अपनी बुआ, बहन, पुत्री के धन का प्रयोग करेंगे, चौड़ी पत्ती वाला कोई वृक्ष लगायेंगे, दक्षिणमुखी घर में रहेंगे तो आपका बुध कमजोर हो सकता है। यदि आपका बुध किसी कारणवश कमजोर हो जाता है तो आपका जीवन बहुत अच्छा नहीं हो सकता है। आपको भाइ–बहनों का सुख नहीं मिल सकता है। आपका उनसे झगड़ा हो सकता है। आपका भाग्य देर से उदय हो सकता है। आपको संतान सुख देर से प्राप्त हो सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्न परहेज और उपाय करें।

परहेज : –

1– मामा और बुआ से न लड़ें।

2– चौड़ी पत्ती वाला कोई वृक्ष न लगायें।

1– मामा और बुआ से न लड़ें।

2– चौड़ी पत्ती वाला कोई वृक्ष न लगायें।

3– बुआ से झगड़ा न करें।

4– विधवा या अविवाहित महिला से अनैतिक संबंध न रखें।

उपाय : –

1– कन्याओं की सेवा करें या दुर्गा पूजा करें।

2– तोता पालें।

बृहस्पति पाचवें भाव मे

आपकी लाल किताब कुण्डली में बृहस्पति पॉचवें भाव में स्थित है। आपकी संतान प्रगति करेगी। अपनी आयु बढ़ने के साथ–साथ आप भी प्रगति करेंगे। आपकी 16वें साल की आयु के दौरान आपका भाग्य चमकेगा। आप संतान की तरफ से सुखी रहेंगे। आपको 60 साल की आयु तक उत्तम परिणाम प्राप्त होंगे। आपको अपनी संतान के जन्म के बाद अपने दादा या पिता से मदद प्राप्त नहीं हो सकती है। आपकी संतान, जिसका जन्म बृहस्पतिवार को होगा, के जन्म के बाद आपका भाग्य चमकेगा। आपको आध्यात्म का परम ज्ञान होगा और आप यश प्राप्त

करेंगे। आप व्यापार या लेखन के द्वारा धन कमायेंगे। आप दूसरों की मदद करेंगे। आप धन संग्रह करेंगे और खुश रहेंगे। सामाजिक क्षेत्र में लोग आपको एक प्रधान की तरह मानेंगे।

यदि आप धर्म के विरूद्ध सोचेंगे, धर्म के नाम पर एकत्र किये गये दान का प्रयोग करेंगे, साधुओं से झगड़ा करेंगे तो आपका बृहस्पति कमजोर हो सकता है। यदि आपका बृहस्पति किसी कारणवश कमजोर हो जाता है तो आप और अधिक क्रोध कर सकते हैं। यदि आप पराई महिलाओं के साथ संबंध रखेंगे तो आपको परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। यदि आप अधिकारियों के साथ बैर भाव रखेंगे या बिना मोल दिये कोई सामान लेंगे तो आपको हानि हो सकती है। यदि आप मांसाहारी भोजन करेंगे या आलस्य करेंगे तो आपको हानि हो सकती है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्न परहेज और उपाय करें।

परहेज : –

1– ईश्वर में आस्था रखें।

2– नाव से किसी तरह का कोई संबंध न रखें।

उपाय : –

1– 1–साधुओं की सेवा करें।

2– 2–धर्मशाला या धार्मिक स्थान को साफ करें।

शुक पाचवें भाव मे

आपकी लाल किताब कुण्डली में शुक्र पॉचवें भाव में स्थित है। आप विद्वान होंगे। आप अपने शत्रुओं को परास्त करेंगे। आपको संतान सुख की प्राप्ति होगी। अपनी पत्नी के साथ आपके संबंध मधुर होंगे और आपका वैवाहिक जीवन आनन्दपूर्ण होगा। आपकी पत्नी वफादार होंगी। आपको सफेद रंग की वस्तुओं से लाभ प्राप्त होगा। आप अपने समुदाय से प्रेम करेंगे। आपके विवाह के 5 साल बाद आपको धन और नौकरों का बहुत सुख प्राप्त होगा। आपको अपने व्यवसाय में उन्नति प्राप्त होगी। जब तक आपकी पत्नी जीवित हैं, आपको किसी प्रकार का अभाव

नहीं होगा। आपका धन बढ़ेगा। आप अपने परिवार और देश से प्रेम करेंगे। आप अपने भाई के लिये अनुकूल होंगे। आप जीवन में बाधाओं का सामना नहीं करेंगे। आपका जीवन आनन्द और शांति से पूर्ण होगा।

यदि आपने अपना चरित्र खराब किया, अपने माता–पिता की इच्छा के विरूद्ध विवाह किया तो आपका शुक्र कमजोर हो सकता है। यदि आपका शुक्र किसी कारणवश कमजोर हो जाता है तो आप कामुक हो सकते हैं और इस कारण से आपके सुख में बाधा पहुँच सकती है। यदि आपकी संगति बुरी हुई या आप प्रेम प्रसंग में पड़े तो भाग्य आपका साथ नहीं दे सकता है। आपके कारण आपके मित्रों को परेशानी हो सकती है। आप दोहरी प्रकृति वाले व्यक्ति होंगे। आपकी पत्नी का गर्भपात हो सकता है या आपको संतान प्राप्ति में देरी हो सकती है। यदि आप प्रेम विवाह करते हैं तो आपको पुत्र की प्राप्ति नहीं हो सकती है। आपकी बहन या बुआ के धन का नाश हो सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्न परहेज और उपाय करें।

परहेज : –

1– महिलाओं के लिये दीवाने न हों।

2– अपने माता–पिता की इच्छा के विरूद्ध विवाह न करें।

3– प्रेम या अन्तर्जातीय विवाह न करें।

उपाय : –

1– अपने शरीर पर दही या दूध मलकर स्नान करें।

2– गाय की सेवा करें।

शनि दसवें भाव मे

आपकी लाल किताब कुण्डली में शनि दसवें भाव में स्थित है। आप महत्वाकांक्षी होंगे। आपको सरकार से लाभ प्राप्त होगा। यदि आप दूसरों का आदर करेंगे तो आपको भी सम्मान मिलेगा। प्रत्येक 7 साल की अवधि के बाद आपका धन बढ़ेगा। आपकी आयु के प्रत्येक 3 साल आपके लिये लाभकरी होंगे। आप धार्मिक और सद्गुणी

व्यक्ति होंगे, लेकिन अपनी वृद्धावस्था के दौरान आप निकम्मे हो सकते हैं। आपके ससुराल वालों का धन भी बढ़ेगा। आपको उत्तम वाहन का सुख प्राप्त होगा। यदि आप अपना व्यवसाय एक स्थान पर करते हैं तो आपको लाभ प्राप्त होगा। आप मेहनती होंगे और अपना भाग्य स्वयं लिखेंगे। आप 39 साल की आयु तक पिता का उत्तम सुख प्राप्त करेंगे। 3रा, 4था, 9वॉ, 21वॉ, 33वॉ, 40वॉ और 57वॉ साल आपके जीवन का बहुत लाभकरी होगा। आपका धन, प्रगति और सम्मान इन सालों में 10 गुना बढ़ेगा।

यदि आप 48 साल की आयु के पहले घर बनाते हैं, मांस–मदिरा का सेवन करेंगे, अपना चरित्र खराब करेंगे, यात्रा वाला व्यवसाय करेंगे तो आपका शनि कमजोर हो सकता है। यदि आपका शनि किसी कारणवश कमजोर हो जाता है तो आपके माता–पिता, जीवनसाथी और ससुराल वालों को परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। आपको हानि हो सकती है या आपकी प्रगति रूक सकती है। आपका धन और सम्मान लुप्त हो सकता है। आपके जीवन का 27वॉ साल अशुभ हो सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्न परहेज और उपाय करें।

परहेज : –

1– मांस–मदिरा का सेवन न करें।

2– भाग–दौड़ के काम न करें।

उपाय : –

1– अपने पास हथियार न रखें।

2– अपने मस्तक पर केसर का तिलक लगायें।

राहु चौथे भाव मे

आपकी लाल किताब कुण्डली में राहु चौथे भाव में स्थित है। आप सद्गुणी, धनी और दीर्घायु होंगे। आप तीर्थस्थानों की यात्रा करेंगे। आप सज्जन होंगे और आरामदायक जीवन व्यतीत करेंगे। आप बड़ी सम्पत्ति के मालिक होंगे। आपको अपने संबंधियों से धन और सम्पत्ति प्राप्त होगी। आप दूसरों की मदद करेंगे और लोग

आपको परोपकारी व्यक्ति मानेंगे। आप दयालु होंगे और आपको वाहन का सुख प्राप्त होगा। आप अपनी बहन और पुत्री के लिये धन खर्च करेंगे। आपको अपने ससुराल से धन और लाभ प्राप्त होते रहेंगे। आपके ससुराल वालों का धन बढ़ेगा। आप 24 साल की आयु के बाद धन संग्रह करेंगे। आपके पिता और संतान को उत्तम परिणाम प्राप्त होंगे, परन्तु आपकी माता के साथ ऐसा नहीं हो सकता है। आपको भूमि, भवन, वाहन और जीवन के अन्य सुख प्राप्त होंगे। यदि आप सरकारी नौकरी में हैं तो आप अपने विभाग में एक उच्च पद प्राप्त करेंगे। आपको बन्दूक या पिस्तौल रखने का शौक होगा।

यदि आपने पूजा का स्थान बदला, लकड़ी का कोयला अपने घर की छत पर रखा, सीढ़ियों के नीचे रसोई बनायी, अपनी माता की उम्र की महिलाओं के साथ संबंध रखा तो आपका राहु कमजोर हो सकता है। यदि आपका राहु किसी कारणवश कमजोर हो जाता है तो आपको 34 साल की आयु के दौरान परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। आपकी माता को भी परेशानी हो सकती है। आपके ससुराल और ननिहाल वालों को अशुभ परिणाम प्राप्त हो सकते हैं। आप अपनी रखैल पर धन बर्बाद करने के बाद अपना जीवन बर्बाद कर सकते हैं। आप किसी दुर्घटना के शिकार हो सकते हैं। आप शेखचिल्ली की तरह दिन में सपने देख सकते हैं।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्न परहेज और उपाय करें।

परहेज : –

1– अपनी माता की उम्र की महिलाओं के साथ अनैतिक संबंध न रखें।

2– गंगा स्नान करें।

उपाय : –

1– 1–घर पर गंगा जल से स्नान करें।

2– 2–पानी में सूखा धनिया प्रवाहित करें।

केतु दसवें भाव मे

आपकी लाल किताब कुंडली में केतु दसवें घर में स्थित है। आप धनवान होंगे और हर तरह की सुख–सुविधाओं

से परिपूर्ण होंगे। आपका जीवन खुशहाल होगा और आपको संतान सुख की प्राप्ति होगी। आपको पुत्र संतान की तुलना में कन्या संतान से अधिक सुख प्राप्त होगा। आप खेल जगत में विश्व प्रसिद्ध बन कर ख्याति प्राप्त कर सकते हैं। आपके धन में बढ़ोत्तरी होगी। आप शंकालु स्वभाव वाले हो सकते हैं। आपके जीवन में 40 वर्श की आयु तक समय मिला–जुला फल देगा। इसके बाद का समय बहुत ही शुभ और सुखकारक सिद्ध होगा। आपकी आर्थिक स्थिति पर कोई विशेश्श प्रभाव नहीं पड़ेगा। कुल मिलाकर आपका जीवन सुखमय रहेगा।

यदि आपने अपने भाई से झगड़ा किया, पराई स्त्रियों से अनैतिक संबंध रखे तो आपका केतु मंदा हो सकता है। यदि किसी कारण वश केतु मंदा हो गया तो आपका चाल–चलन ठीक नहीं हो सकता है। आप या तो नपुंसक हो सकते हैं या आपकी पुत्रियां अधिक हो सकती या आपको पुरुश्श संतान नहीं हो सकती है या संतान गोद लेने की नौबत आ सकती है। इसकी वजह से आपको बहुत परेशानियां झेलनी पड़ सकती हैं। आपके भाई आपको बर्बाद कर सकते हैं या आपके धन का दुरुपयोग कर सकते हैं। पराई औरत के साथ संबंध आपके दाम्पत्य सुख में बाधा पहुंचा सकता है। यह आपके जीवन के लिए घातक सिद्ध हो सकता है। आपको 48 वर्श की आयु के आस–पास या माता की मौत के बाद पुत्र सुख मिल सकता हैं।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्न परहेज और उपाय करें।

परहेज : –

1– चाल–चलन ठीक रखें।

2– कुत्तों से नफरत न करें।

उपाय : –

1– मकान की नींव में चांदी के बर्तन में शहद भर कर रखें।

2– घर में चांदी के बर्तन में शहद भर कर रखें।

लाल किताब वर्षफल

18:12:2022--17:12:2023

वर्षफल कुण्डली (50)

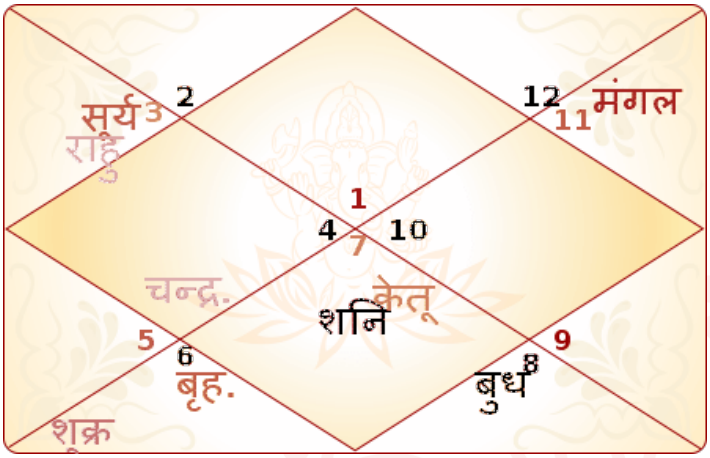

लग्न कुण्डली

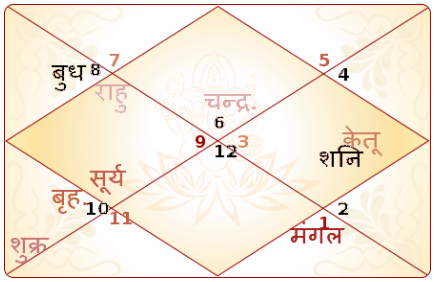

चन्द्र कुण्डली (लाल किताब)

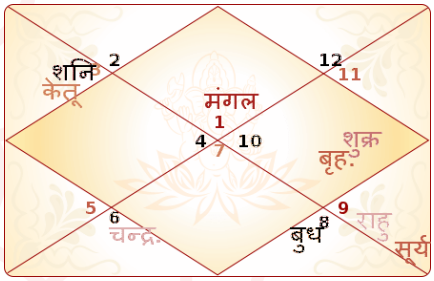

लाल किताब वर्षफल में ग्रहों की स्थिति

ग्रह	भाव	भावेश	प्रभाव	पक्का घर	भाग्यशाली	साथी ग्रह	कायम	धर्मी	सोया	विशेष
सूर्य	3	5	राशि							शुभ भाव
चन्द्रमा	4	4	ग्रह	हाँ	हाँ		हाँ			शुभ भाव
मंगल	11	1, 8	राशि				हाँ		हाँ	शुभ भाव
बुध	8	3, 6	राशि			शनि			हाँ	अशुभ भाव
बृहस्पति	6	9, 12	राशि						हाँ	अशुभ भाव
शुक्र	6	2, 7	ग्रह			केतु			हाँ	अशुभ भाव
शनि	7	10, 11	ग्रह			बुध	हाँ		हाँ	शुभ भाव
राहु	3		ग्रह							शुभ भाव
केतु	7		ग्रह			शुक्र			हाँ	अशुभ भाव

लाल किताब वर्षफल में भावों की स्थिति

भाव	भावस्थ ग्रह	मालिक	पक्का घर	सोया	उच्च	नीच	भाग्य उत्प्रेरक
1		मंगल	सूर्य	हाँ	सूर्य	शनि	मंगल
2		शुक्र	बृहस्पति		चन्द्रमा		चन्द्रमा
3	सूर्य, राहु	बुध	मंगल		राहु	केतु	बुध
4	चन्द्रमा	चन्द्रमा	चन्द्रमा		बृहस्पति	मंगल	चन्द्रमा
5		सूर्य	बृहस्पति	हाँ			सूर्य
6	बृहस्पति, शुक	बुध	बुध,केतु		बुध,राहु	शुक,केतु	केतु
7	शनि, केतु	शुक्र	शुक,बुध		शनि		शुक्र
8	बुध	मंगल	मंगल,शनि			चन्द्रमा	चन्द्रमा
9		बृहस्पति	बृहस्पति		केतु	राहु	शनि
10		शनि	शनि		मंगल	बृहस्पति	शनि
11	मंगल	शनि	शनि				बृहस्पति
12		बृहस्पति	बृहस्पति		शुक,केतु	बुध,राहु	राहु

लाल किताब वर्षफल – 50

सूर्य तीसरे भाव में

आपकी वर्षफल कुण्डली में सूर्य अशुभ स्थिति में है।

आपकी कुण्डली में सूर्य शत्रु ग्रह से युक्त या दृष्ट होकर तीसरे भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, आप पर गलत इल्जाम लग सकता है, जिसकी वजह से आप कानूनी विवाद में फंस सकते हैं। नौकरी/कारोबार में प्रतिकूल परिस्थितियां उत्पन्न होने के कारण आपकी मानसिक शांति भंग हो सकती है। दिन में ही आपके धन की चोरी हो सकती है। किसी निकट संबंधी से झगड़ा या विवाद हो सकता है। आपको पराई स्त्रियों से संबंध नहीं रखना चाहिए, अन्यथा बदनामी हो सकती है।

वर्षफल में सूर्य का उपाय

सूर्य के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियाँ बरतनी चाहिए।

1– 50 ग्राम जौ लाल कपड़े में बांध कर अपने घर के किसी अंधेरी कोठरी में रखें।
2– अपना चाल–चलन ठीक रखें।
3– सबका भला सोचें।

चन्द्रमा चौथे भाव में

आपकी वर्षफल कुण्डली में चन्द्रमा अशुभ स्थिति में है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में चंद्रमा शत्रु ग्रहों से युक्त या दृष्ट होकर चौथे भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार आपको इस वर्ष गहरे पानी में नहाने से बचना चाहिए। आपकी माता का स्वास्थ्य भी चिन्ता का विषय हो सकता है। नशे की प्रवृत्ति से आपको बचना चाहिए। दूसरों की मुसीबत को अपने गले नहीं लगाना चाहिए।

वर्षफल में चन्द्रमा का उपाय

चन्द्रमा के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियाँ बरतनी चाहिए।

1– अपनी माता को अपनी कमाई में से हिस्सा दें।
2– इस वर्ष कोई भी कार्य शुरू करने से पहले अपने घर में दूध से भरा मिट्टी का घड़ा रखें। दूध और दूध से बनी हुई वस्तुओं का व्यापार ना करें।
3– बुजुर्ग औरतों का आशीर्वाद लें।
4– दूध ना जलायें।

5– दान–पुण्य करते रहें।

मंगल ग्यारहवें भाव में

आपकी वर्षफल कुण्डली में मंगल अशुभ स्थिति में है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में मंगल शत्रु ग्रहों से युक्त या दृष्ट होकर ग्यारहवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, इस वर्ष आपका अपने भाईयों के साथ झगड़ा या मनमुटाव हो सकता है। अपने ही लोग आपके विरोधी हो सकते हैं। आपके मन में सांसारिक भोग और वासनात्मक रूचियों में बढोत्तरी हो सकती है। आपकी संतान आपको धन हानि करा सकती है। धन संपत्ति को लेकर अपने पारिवारिक सदस्यों से आपका मनमुटाव हो सकता है।

वर्षफल में मंगल का उपाय

मंगल के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियाँ बरतनी चाहिए।

1– मिट्टी के बर्तन में शहद या सिन्दूर भरकर रखें।
2– अपनी पैतृक सम्पत्ति ना बेचें।
3– अपने पुत्र के जन्मदिन पर साले और भान्जे को उपहार दें।
4– अपने बहन–बहनोई की सेवा करें।

बुध आठवें भाव में

आपकी वर्षफल कुण्डली में बुध अशुभ स्थिति में है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में बुध शत्रु ग्रहों से युक्त या दृष्ट होकर आठवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, इस वर्ष आपके शत्रु आप पर हावी हो सकते हैं। आपका पारिवारिक जीवन भी ज्यादा सुखमय नहीं हो सकता है। इस वर्ष आपको विपरीत लिंग के व्यक्तियों से संबंध बनाने से बचना चाहिए, अन्यथा आपका पारिवारिक जीवन अशांत हो सकता है।

वर्षफल में बुध का उपाय

बुध के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियाँ बरतनी चाहिए।

1– अपने घर की छत पर बारिश का पानी रखें।
2– नितम्ब पर काला सुरमा लगायें।
3– घर के पूजास्थान को ना बदलें।
4– कुल्हड़ में शहद भरकर विराने में दबायें।
5– ताँबे के बर्तन में हरी मूंग भरकर जल में प्रवाहित करें।

बृहस्पति छठे भाव में

आपकी वर्षफल कुण्डली में बृहस्पति शुभ स्थिति में है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में बृहस्पति शुभ स्थिति में छठवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, धार्मिक क्रिया–कलापों में आपको विशेष रूचि होगी। आपकी आर्थिक स्थिति भी सुदृढ़ होगी। इस वर्ष आपके मन में परोपकार की भावना भी प्रबल होगी। आपके ननिहाल में भी खुशियों का माहौल होगा। इस वर्ष आपके बहुत सारे कार्य बिना मेहनत के ही पूरे हो जायेंगे।

वर्षफल में बृहस्पति का उपाय

बृहस्पति के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियाँ बरतनी चाहिए।

1– चने की दाल किसी धार्मिक स्थान में दान करें।
2– इस वर्ष अपने कुल–पुरोहित या किसी भी मंदिर के पुजारी को वस्त्र दान करें।
3– मुर्गियों को अनाज डालें।
4– दान या मुत की कोई भी वस्तु ना लें।

शुक्र छठे भाव में

आपकी वर्षफल कुण्डली में शुक्र अशुभ स्थिति में है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में शुक्र शत्रु ग्रहों से युक्त या दृष्ट होकर छठवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, इस वर्ष अपने जीवनसाथी के साथ आपके संबंधों में कड़वाहट रह सकती है और आपके जीवनसाथी के पैरों या पैर की एड़ियों में कष्ट हो सकता है। आपके जीवनसाथी को इस वर्ष गुप्त रोग होने की भी संभावना हो सकती है। किसी स्त्री से विवाद होने के कारण आपको आर्थिक हानि भी उठानी पड़ सकती है। इस वर्ष प्रणय संबंध में किसी मित्र के द्वारा विश्वासघात की भी संभावना है।

वर्षफल में शुक्र का उपाय

शुक्र के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियाँ बरतनी चाहिए।

1– अपनी पत्नी को नंगे पांव ना चलने दें।
2– स्त्रियों का आदर करें।
3– ठोस चांदी अपने पास रखें।

शनि सातवें भाव में

आपकी वर्षफल कुण्डली में शनि अशुभ स्थिति में है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में शनि शत्रु ग्रहों से युक्त या दृष्ट होकर सातवें भाव में बैठा हुआ है। इस वर्ष जीवनसाथी की अस्वस्थता और वैचारिक मतभेदों की वजह से वैवाहिक जीवन अशांत हो सकता है। आपको अपने साझेदारों पर शक नहीं करना चाहिए, अन्यथा आपके संबंध बिगड़ सकते हैं। चिकित्सा और रसायन से संबंधित व्यापार में आपको घाटा होने की संभावना है। गुस्से की मात्रा भी इस वर्ष ज्यादा ही होगी, इसलिए सावधानी के तौर पर आपको अपने पास कोई भी हथियार आदि नहीं रखना चाहिए। इस वर्ष बुरे लोगों की संगति भी आपके लिए भारी पड़ सकती है।

वर्षफल में शनि का उपाय

शनि के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियाँ बरतनी चाहिए।

1– मिट्टी के बर्तन में शहद भरकर विराने में दबायें।
2– बुरे लोगों की संगति ना करें।
3– डॉक्टर और केमिस्ट की संगति से बचें।
4– काली गाय की सेवा करें।

राहु तीसरे भाव में

आपकी वर्षफल कुण्डली में राहु शुभ स्थिति में है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में राहु शुभ स्थिति में तीसरे भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, आर्थिक मामलों में यह वर्ष भाग्यशाली होगा। नौकरी/कारोबार में उन्नति होगी और आपके शत्रु इस साल दबे रहेंगे। भविष्य में घटने वाली घटनाओं का आपको पूर्वाभास हो जाएगा और आपके लेखन में तलवार जैसी ताकत होगी। सट्टे, लॉटरी इत्यादि से आकस्मिक धन की प्राप्ति होगी। संतान पक्ष से कुछ चिन्ताएं हो सकती हैं। वर्ष के अन्त में भाग्योदय से संबंधित कोई विशेष घटना घटित हो सकती है।

वर्षफल में राहु का उपाय

राहु के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियाँ बरतनी चाहिए।

1– हाथी दांत या इससे बनी हुई वस्तुओं का व्यवसाय ना करें।
2– हाथी की शक्ल के खिलौने अपने घर में ना रखें।
3– चांदी की डिब्बी में चावल डालकर अपने घर में रखें।

केतु सातवें भाव में

आपकी वर्षफल कुण्डली में केतु शुभ स्थिति में है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में केतु शुभ स्थिति में होकर सातवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, आपकी धन–सम्पत्ति और मान–मर्यादा में अभूतपूर्व वृद्धि होगी। पारिवारिक और मानसिक स्थिति ठीक रहेगी। आपकी संतान भी आपकी सहायता करेगी। तीर्थाटन की भी संभावना है। टेलीविजन, कम्प्यूटर इत्यादि के व्यापार में लाभ होगा। समाज में आपकी मान–प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

वर्षफल में केतु का उपाय

केतु के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियाँ बरतनी चाहिए।

1– अपना चाल–चलन ठीक रखें।

2– 4 केले 4 दिन बहते हुए पानी में बहायें।

3– 4 नींबू 4 दिन तक जल में प्रवाहित करें।

Disclaimer

The calculations, future predictions, and remedies given in this Astrological Report are all based on the principles of either on Vedic Astrology, KP System, Jaimini or Lal Kitab, Numerology which are the result of consulting and engaging highly learned astrologers and astrology practitioners. This Report will prove to be highly useful for astrologers and practitioners of Astrology. We earnestly request the common users of this Report that they should not follow the Lal Kitab and or other prediction/remedies given in this Report without consulting a learned astrologer or an expert on this subject. Failing to do so might lead you to unexpected results which may or may not be favorable towards your well-being.

www.webjyotishi.com/MindSutra Software Technologies makes no warranty about the accuracy of any data contained herein, and the native is advised to not to take as conclusive any prediction generated for him. If you follow the advice given in this report you do so at your own risk, ww.webjyotishi.com/ MindSutra Software Technologies or any of its associates are not responsible for the consequence of any event or action.

www.webjyotishi.com/MindSutra Software Technologies shall not stand liable for any damages or harm done.

All disputes are subject to New Delhi Jurisdiction only.

Wishing the very best – prosperity and happiness.